B.M.A College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
BA (Hons) Part-1 पेपर-1
7,7,20
Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of Pol-Sci

वयस्क मताधिकार के दोष

(1) व्यवस्थापिका मण्डल की विशिष्टता का अन्त → विधि बनाने वाली सभा में योग्यतम नागरिकों का होना आवश्यक है। वयस्क मताधिकार की प्रणाली में शिक्षा का कोई भी स्थान नहीं होता। सभी नागरिकों को केवल आयु के आधार पर चुनाव एवं मत का अधिकार दिया जाता है। ऐसी दशा में मण्डल अयोग्य व्यक्तियों का सदन बन सकता है अतएव वयस्क मताधिकार प्रणाली में व्यवस्थापिका मण्डल की विशिष्टता की समाप्ति की संभावना बनी रहती है।

(2) अव्यावहारिक सिद्धान्त → वयस्क मताधिकार सभी नागरिकों को समान रूप से मत प्रदान करने का अधिकार देता है। यह अधिकार अव्यावहारिक है क्योंकि सभी ~~नागरिक~~ में समान योग्यता नहीं होती है। कुछ नागरिक अपनी अज्ञानता के ~~कारण~~ कारण इस अधिकार का उचित उपयोग भी नहीं कर सकते। उनको निरक्षरता के कारण भी पता नहीं रहता कि किस प्रकार मत प्रदान किया जाता है। परिणाम यह होता है कि निर्वाचन के समय बहुत से मत नष्ट हो जाते हैं।

(3) भ्रष्टाचार की उत्पत्ति → वयस्क मताधिकार शिक्षित, अशिक्षित, धनी, निर्धन, पुरुष, स्त्री सभी को बिना किसी भेद भाव के प्रदान किया जाता है। ऐसी दशा में शिक्षित वर्ग अशिक्षितों, धनी वर्ग निर्धनों एवं पुरुष स्त्रियों को ~~धोखा~~ धोखा दे सकते हैं और अनुचित प्रभाव डालकर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं।

परिणाम यह होता है कि निर्धन के समर्थन रव का दुरुपयोग होता है और घूसखोरी, बेईमानी, तथा धोखाबाजी का बाजार गर्म हो जाता है और भ्रष्टाचार का बीजारोपण होता है।

) <u>शिक्षा योग्यता की अपेक्षा</u> → वयस्क मताधिकार योग्य एवं अयोग्य दोनों ही नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान रूप में प्रदान किया जाता है।

) <u>स्त्रियाँ मताधिकार के लिए अयोग्य</u> → वयस्क मताधिकार पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी समान रूप से दिया जाता है। स्त्रियों के राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेने से उनकी लज्जा का अन्त हो जाता है तथा पारिवारिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त न ही सब स्त्रियों में इतना ज्ञान होता है कि वे राजनीतिक समस्याओं को भलीभाँति समझ सकें और न अ कार्य करने की शारीरिक क्षमता पाई जाती है।

<u>निष्कर्ष</u> → प्रत्येक अवगुण होते हुए भी हम वयस्क मताधिकार को आधुनिक प्रजातन्त्र प्रणाली के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते हैं जैसा कि लास्की ने लिखा है वयस्क मताधिकार का स्थान कोई दूसरी प्रणाली नहीं ले सकती।